संस्कारों से ही समस्याओं का उन्मूलन संभव : डॉ. इंद्रेश कुमार

नई दिल्ली। फोकस न्यूज। 'समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं व्याप्त हैं। संस्कृति द्वारा पोषित संस्कारों से ही उनका उन्मूलन संभव है।' ऐसा डॉ. इंद्रेश कुमार (अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने पीजीडीएवी महाविद्यालय सांध्य एवं विश्व नारी अभ्युदय संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में महिला क़ानून का दुरुपयोग विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने वक्तव्य में कहा। उन्होंने आगे कहा कि क़ानून समाज में समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते क्योंकि क़ानून तो घटना के घटने के बाद काम करना शुरू करता है। लेकिन संस्कृति और संस्कार तो घटना के घटने से पहले ही काम करते हैं और ऐसे कृत्य को होने से ही रोक देते हैं जिससे कानून के पास जाने की आवश्यकता पड़े। आगे उन्होंने कहा कि जैसे–जैसे संस्कृति और संस्कार शिक्षा में घटे वैसे–वैसे अपराधियों की बाढ आती गई। आज पूरा विश्व समस्याओं का समाधान भारतीय संस्कारों में देखता है। इसलिए आज भारत को समस्या के लिए नहीं, बल्कि समाधान के लिए जाना जाता है। 'पूर्व की ओर देखो और उनसे संस्कार सीखो' जैसे वाक्य आजकल पश्चिमी जगत में सुनाई देना इसका प्रमाण भी हैं। पीजीडीएवी महाविद्यालय सांध्य के प्राचार्य प्रो रवीन्द्र कुमार गुप्ता ने कहा कि महिला कानूनों के दुरुपयोग की बात महिलाओं के ही संगठन के द्वारा उठाया जाना प्रशंसनीय है। यह दिखाता है कि भारत की महिलाएं समाज में अन्याय के विरुद्ध प्रथम पंक्ति में खड़ी होकर मार्गदर्शन करने के लिए हमेशा से तत्पर रहती हैं। चाहे बात ज्ञान की हो विज्ञान की हो या नेतृत्व की हो आज भारत की महिलाएँ राष्ट्रपति से लेकर मुख्यमंत्री तक के रूप में अनेक प्रकार से समाज का नेतृत्व कर सही दिशा दिखा रही हैं।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित लक्ष्मण सोलंकी, पूर्व न्यायाधीश तीस हजारी कोर्ट ने कहा कि क़ानून की शुरुआत तब होती है जब अपराध बढ़ते हैं और अपराध तब बढ़ते हैं जब परिवार और समाज के भीतर से समरसता जाने लगती है। क़ानून की प्रक्रिया बड़ी लंबी होती है और देरी से न्याय मिलना भी अन्याय ही कहलाता है। इसलिए आवश्यकता है कि समस्या का समाधान कानून में ढूँढने के स्थान पर परिवार और समाज के भीतर समरसता को बढ़ा कर एक मजबूत और संस्कारी समाज की स्थापना की जाए। विश्व नारी अभ्युदय संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती रीता जायसवाल ने अपने संस्थान का परिचय और उसकी कार्यों के बारे में संक्षिप्त में बताया। विश्व नारी अभ्युदय संगठन की राष्ट्रीय संरक्षिका मेजर आशा माथुर ने कार्यक्रम में उप. स्थित सभी मंचासीन अतिथियों, प्रोफेसरों, विद्यार्थियों एवं अन्य श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में 27 प्रोफेसर 74 विद्यार्थी और 22 अन्य संगठनों और क्षेत्रों से आए सदस्यों में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के अंत में इंद्रेश जी द्वारा कानून व्यवस्था से प्रताड़ित व्यक्तियों के अनुभव और समस्याओं के संदर्भ में बातचीत की गई और उनका समाधान करने का प्रयास किया गया।